B.A - part-III Paper - VII 01
84

प्राकृत सट्टक साहित्य

इकाई (ङ) रंभामञ्जरी

(क) रंभामञ्जरी सट्टक का समीक्षा प्रस्तुत करें।

Ans- रंभामञ्जरी सट्टक का समीक्षा प्रस्तुत करते हुए नयचन्द्र ने इस सट्टक में अपने आपको श्रीहर्ष और अमरचन्द्र कवि के समान प्रतिभाशाली बताया है। यह सट्टक अधूरा प्रतीत होता है, इसमें चार जवनिकाओं के स्थान में तीन ही जवनिकाएँ पायी जाती हैं। कवि ने कर्पूरमञ्जरी से श्रेष्ठ बनाने की प्रतिज्ञा की है, पर यह कर्पूरमञ्जरी से अच्छा बन नहीं सका है। इस सट्टक का उद्देश्य क्या है यह अन्त तक अवगत नहीं हो पाता है और न फल की ही प्राप्ति हो पाती। कथा का अन्त किस प्रकार हुआ, यह जिज्ञासा अन्त तक बनी रहती है। अतः अवश्य ही यह त्रुटित सट्टक है। नायक का चरित्र स्पष्ट नहीं हो पाया है, तथा यह सामन्तवादी नायक है और इसके जीवन में किसी भी प्रकार की मर्यादा नहीं है। सात रानियों के रहने पर भी रम्भा के साथ विवाह करता है, और वह भी इस स्थिति में जबकि रम्भा का विवाह अन्य किसी व्यक्ति के साथ हो गया है। रम्भा का अपहरण करा लेना और उसके साथ विवाह कर लेना अभिजात्य संस्कार नहीं है।

अतएव इस सट्टक का उद्देश्य कुछ दिखलायी नहीं पड़ता। कथावस्तु में मौलिकता तो अवश्य है, पर रोचकता नहीं।

कवि ने वसन्तागमन के अवसर पर विरहिणी की दशा का चित्रण करते हुए लिखा है

गाथा -

मयंको संधको मलयपवणो देहतवणो
कहू सद्दी रुद्दो सुमसरसरा जीविदहरा।
वराइयं राई उवजणइ णिद्दपि ण इवणो
कहं हा जीविस्से इह विरहिया दूर पहिया॥
1/20॥

अर्थात् - वसन्तागमन के समय जिसका पति विदेश गया हुआ है, वह विरहिणी कैसे जीवित रहेगी। उसे मृगांक-चन्द्र आपत्ति के समान प्रतीत होता है, शीतल मलयानिल देह को सन्तप्त करता है, कोकिल की कूक रौद्र मालूम होती है कामदेव के बाण जीवन को अपहरण करने वाले जान पड़ते है। बेचारी विरहिणी को रात्रि में एक क्षण के लिए भी नींद आती।

-चन्द्रोदय का वर्णन भी दर्शनीय है-

तमभरप्पसरणणिरोहओ
विरहिणी विरहग्गिविबोहओ।
समहलो गयणम्मि समुट्ठिदो
सहि जअस्स मणस्स विणोयओ॥ [1/4]

अर्थात् रानी-चन्द्रमा को उदित देखकर सखी से कहती है कि हे सखी! आकाश में चन्द्रमा उदित हो गया है। यह किस प्राणी के मन को अनुरंजित नहीं करता है। यह अन्धकार को दूर करने वाला और विरहिणी नायिकाओं की विरहाग्नि को प्रज्वलित करने वाला है। कवि नायिका के अंगों में सौन्दर्य जन्य बिम्ब को देखकर कल्पना करता है कि इन नायिकाओं

निर्माण एक विधाता ने नहीं किया है, बल्कि अनेक विधाताओं ने किया है।

बाहू जेण मिणालकोमलसरे तेणं न घड्डा थणा।
दिट्ठी जेण तरंगभंगतरला तेण न मंदा गई।।
मज्झं जेण किसं न तेण घडियं थोर नियंबत्थलं।
एयाए विहिणा वि तेन्न घडिदा एगेण मन्ने तणु।।

अर्थात:

जिस विधाता ने इसकी मृणाल के समान कोमल बाहुओं को बनाया है, वह इसके कठोर स्तनों को नहीं बना सकता। अतः बाहुओं का निर्माता पृथक विधाता है और कठोर स्तनों का निर्माता पृथक विधाता। जिसने इसकी चंचल दृष्टि बनायी है, वह मंद गति इसे नहीं बना सकता। जिस विधाता ने इसकी कमर कोमल बनाया है, वह इसके नितम्बों को स्थूल नहीं बना सकता।

अतः इसका निर्माण एक विधाता ने नहीं किया, बल्कि अनेक विधाताओं ने इसका निर्माण किया होगा।

इस सट्टक में संस्कृत का प्रयोग हुआ है। गद्य और पद्य दोनों रूपों में प्राकृत के साथ संस्कृत व्यवहृत है।

वर्णन सौन्दर्य ~~एवं~~ एवं काव्यकला की दृष्टि से यह सट्टक अच्छा है।

रंभामंजरी का समीक्षा प्रस्तुत में कवि ने अनेक प्रकार के नायिका के भाव रस को उजागर किया है। यह सट्टक बहुत महत्वपूर्ण रहा है।